॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

४०३

महाकालसंहिता

(कामकलाकालीखण्डः)

ज्ञानवतीहिन्दीभाष्येण विभूषिता

व्याख्याकारः सम्पादकश्च

आचार्य राधेश्याम चतुर्वेदी

व्याकरणाचार्यः

एम० ए० (संस्कृत), पी-एच्०डी०, लब्धस्वर्णपदकः

शास्त्रचूडामणिविद्वान्

संस्कृतविभागः, कलासङ्कायः,

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

(२)

विषयवस्तु सङ्क्षेप

तन्त्र अथवा आगम शास्त्र शिवपार्वतीसंवाद्र रूप होते हैं । महाकाल संहिता भी भगवती उमा और महाकाल के मध्य घटित प्रश्नोत्तर रूप है । इस आप्तग्रन्थ में महादेवी काली का भेदप्रभेद सहित साङ्गोपाङ्ग वर्णन प्रस्तुत है ।

प्रथम पटल—देवी ने महाकाल से प्रश्न किया कि आपने तारा छिन्नमस्ता आदि अट्ठाईस तथा अन्य देवियों का वर्णन किया किन्तु कामकला काली का वर्णन नहीं किया । अत: उसका रहस्य कवच आदि के साथ वर्णन कीजिये । महाकाल ने कहा कि कामकलाकालीसदृश भोगमोक्षप्रद अन्य कोई साधन नहीं है । इन्द्र, वरुण, कुबेर बाणासुर, रावण, यम, विवस्वान्, विष्णु आदि देवता एवं ऋषिगण तथा मैंने स्वयं इसकी उपासना की है । इसकी साधना से अणिमा आदि समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं तथा मारण आदि षट् कार्य सम्पन्न होते हैं । कोटि जन्म में अर्जित पुण्य का जब उदय होता है तब इसकी सिद्धि मिलती है । इसकी आराधना का प्रारम्भ कभी भी किया जा सकता है । इसके बाद महाकाल ने कामकला काली खण्ड के विषयों को उदि्दष्ट किया है । ये विषय हैं मन्त्र, ध्यान, पूजा, कवच आदि । काली के नव प्रकारों का नामोल्लेख कर कामकला काली को इनमें मुख्यतमा कहा गया है ।

द्वितीय पटल—इस पटल में कामकला काली के मन्त्र का स्वरूप, उस मन्त्र की महिमा, उसके ऋषि आदि का वर्णन करने के पश्चात् षडङ्गन्यास का वर्णन कर कामकला काली के ध्येय स्वरूप का वर्णन है । यह काली पके हुए जामुन के फल के रङ्गवाली, पैर तक लटके बालों वाली, सोलह भुजाओं वाली, रक्तपान में आसक्त, मनुष्य की आँत शिर अङ्गुली आदि का आभूषण धारण की हुई है । तलवार, त्रिशूल, चक्र, बाण, अंकुश आदि अस्त्रों तथा नृमुण्ड आदि को हाथों में ली हुई है। स्वरूपवर्णन के बाद इस काली के यन्त्र-निर्माण की प्रक्रिया को बतला कर काली की पूजा के लिए प्रयुक्त किये जाने वाले रजस् आदि उपचारों के अर्पण के मन्त्र एवं विधि के साथ बलि के अर्पण का मन्त्र बतलाया गया है ।

तृतीय पटल—देवी के सात आवरण हैं—१. अन्त: त्रिकोण २. मध्य त्रिकोण ३. बाह्य त्रिकोण, इनमें क्रम से संहारिणी आदि छह तथा उग्रा आदि छह इस प्रकार बारह देवियों तथा ब्राह्मी आदि नव देवियों की पूजा होती है । ४. इस आवरण में अष्ट भैरवों का पूजन होता है । ५. पञ्चम आवरण में आठ क्षेत्रपालों की पूजा होती है। ६. छठे आवरण में उल्कामुखी आदि आठ योगिनियाँ पूजी जाती हैं । ७. सातवें में दशों दिशाओं में दश दिक्पाल पूजित होते हैं । कामकला काली की पुरश्चरण-विधि का वर्णन करने के पश्चात् इसकी काम्य उपासना के तेरह प्रकारों को बतला कर अन्त में उत्तमसिद्धिलाभ के लिये विधेय हवन की चर्चा की गयी है ।

चतुर्थ पटल—प्रारम्भ में शिवा अर्थात् सियारिन से सम्बद्ध प्रयोग को बतलाया गया है । इसमें अठारह पशुओं और छत्तीस पक्षियों के मांस को अन्य उपचारों के साथ शिवाओं के लिये देने की विधि बतलायी गयी है । इसके लिये आवाहन आदि से सम्बद्ध मन्त्रों का भी वर्णन है । यह भी बतलाया गया कि अठारह प्रकार के पशुओ एवं छत्तीस प्रकार के पक्षियों के कच्चे मांस के अर्पण का पृथक्-पृथक् विशिष्ट फल होता है । ब्राह्मण वर्ग के लोग शिवाओं के लिये नरमांस का अर्पण न करें । देवता रूपी शिवायें यदि नहीं आती तो अनुष्ठाता को विघ्न का सामना करना पड़ता है । शिवाबलि के माहात्म्य का वर्णन करने के साथ शिवास्तोत्र का तथा शिवाबलि से अवशिष्ट अन्न के विनियोग का वर्णन कर अन्त में गुह्य काली की कामकला काली की अपेक्षा श्रेष्ठता बतलायी गयी है ।

पञ्चम पटल—इस पटल में कामकला काली की आराधना तीन प्रकार की बतलायी गयी हैं । राज प्रयोग, मध्य प्रयोग और लघु प्रयोग । प्रस्तुत पटल में राजप्रयोग का वर्णन है । इस प्रयोग में तेली धोबी आदि उच्चनीच विभिन्न वर्ग की विभिन्न जाति की सोलहवर्षीया रूपवती यौवनशालिनी सुन्दरियों का प्रयोग होता है । विधिपूर्वक मण्डल की रचना कर उसमें उन सुन्दरियों को मन्त्रोच्चारपूर्वक बैठाया जाता है । उनकी मन्त्रोच्चारपूर्वक स्नान, वस्त्र, कज्जल गन्ध आदि से पूजा की जाती है । इसके बाद कामकला नामक यन्त्र पर जगद्धात्री माँ काली का मन्त्रोच्चारपूर्वक आवाहन और सानिध्य की भावना कर कामकलाकाली प्रयोग के लिये उनसे प्रार्थना का वर्णन करने के बाद षडङ्गन्यास तत्पश्चात् पीठन्यास की विधि का वर्णन है । अनुष्ठाता अपने अन्दर इष्टदेवता का ध्यान कर उनकी मानस पूजा करे । तत्पश्चात् इष्टदेवता के लिये बाह्य पूजासामग्री के संग्रह का वर्णन कर बाह्य पूजा के क्रम और विधि का वर्णन करने के पश्चात् देवी के प्रीतिप्रद नैवेद्य का वर्णन किया गया है । बलि के लिये विहित और निषिद्ध पशुओं का वर्णन कर पशुओं के अनुकल्प का उल्लेख करने के पश्चात् निषिद्ध एवं ग्राह्य सुन्दरियों का वर्णन करते हुए पटल के अन्त में आवाहित सुन्दरियों के विसर्जन की चर्चा है ।

षष्ठ पटल—प्रस्तुत पटल में कामकालीप्रयोग के अधिकारी, उनके कर्त्तव्य, आसन, जपमाला के प्रकारों का वर्णन करने के पश्चात् वशीकरण, उच्चाटन, मारण आदि के पाँच प्रयोग दिये गये हैं । तत्पश्चात् रक्षायन्त्र की रचनाविधि उसका माहात्म्य और उपयोग का फल बतलाया गया है । इसके पश्चात् आकर्षण पादुकासिद्धि, खेचरीसिद्धि, खड्गसिद्धि का वर्णन करने के पश्चात् खड्ग के लिये बलिदान आदि का उल्लेख है । सिद्धाञ्जन की सिद्धि गुटिका सिद्धि गुटिका के लिये प्रयोज्य कुम्भ तथा बलिदान, कुम्भरक्षा के पश्चात् गुटिका धारण करना मन्त्र एवं उसके प्रभाव का विस्तृत वर्णन कर तालबेताल को सिद्ध करने की प्रक्रिया का वर्णन है । अन्त में इस सिद्धि के लिये नरबलि के मन्त्र का वर्णन कर इसके फल का चर्चा की गयी है ।

सप्तम पटल—सप्तम पटल में अग्निस्थापन, कामनाभेद से हवनीय द्रव्य एवं काष्ठ का वर्णन उद्धृत है । ..नविधि का वर्णन कर एकद्रव्य और मिश्रद्रव्य के होम का फल बतलाने के पश्चात् विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भिन्न-भिन्न पुष्पों के हवन का वर्णन किया गया है । एवमेव अनेक प्रकार के फलों का पृथक्-पृथक् हवन करने से तत्तत् पृथक् फल का लाभ होता है यह बतलाने के बाद इस पटल में नानाविध अन्न की आहुति के नानाविध फल का वर्णन करने के पश्चात् रसों एवं विविध वस्तुओं की आहुति का फल वर्णित है । इसी प्रकार होम के लिये प्रयोज्य विभिन्न समिधाओं के विभिन्न फलों का वर्णन कर अनेक प्रकार के पशुओं के द्विजाति पुरुषों के तथा पक्षियों के मांस की आहुति के फल की चर्चा की गयी है । इसके पश्चात् आहुतिनिर्माण तथा काम्यकर्म के अनुरूप कुण्डनिर्माण को बतला कर योगविधि योगमाहात्म्य के उल्लेख के पश्चात् योगोपकारि देहसंस्थान का विस्तृत वर्णन किया गया है । देवी के निराकार स्वरूप का ध्यान, षट्चक्रभेदन से कुण्डलिनी जागरण, पुन: कुण्डलिनी की स्वस्थान प्राप्ति एवं योगमहिमा का वर्णन कर मोक्ष का उत्कर्ष एवं सिद्धि का अपकर्ष बतलाया गया है । तदनु देवी के साकार स्वरूप की चर्चा कर उसके ध्यान से नाना प्रकार के सिद्धिलाभ के उपायों को प्रस्तुत किया गया है । पटल के अन्त में पूजा की तीन श्रेणियों का वर्णन कर विश्वास को फलप्राप्ति का आधार बतलाया गया है ।

अष्टम पटल—देवी ने अन्य रहस्यों के बारे में प्रश्न किया । महाकाल ने कहा कि जो षोढ़ान्यास मै बतलाऊँगा वह अत्यन्त गोपनीय है । इस न्यास की महिमा के सन्दर्भ में कहा गया कि पौरव वृहदश्व आदि पैंतीस राजाओं ने इस न्यास का अनुष्ठान कर सप्तद्वीपेश्वरत्व और चक्रवर्त्तित्व प्राप्त किया था । षोढ़ान्यास की उत्पत्ति की मूलभूत त्रिपुरासुर की कथा का वर्णन किया गया है । सङ्क्षेप में वह इस प्रकार है—इन्द्र त्रिपुरासुर के संहार के लिये रुद्र की शरण में गये । इस कार्य के लिये विशिष्ट रथ का निर्माण हुआ । तत्पश्चात् देवी ने शिव को षोढान्यास का उपदेश दिया । इसी क्रम में षोढान्यास के ऋषि आदि का नाम उद्दिष्ट कर उन न्यासों का नामकथन किया गया है । फिर न्यास की विधि बतलायी गयी है । इसके बाद प्रथम नृसिंह न्यास के ऋषि आदि एवं उसकी विधि का वर्णन कर नृसिंह भगवान के इक्यावन नामों का निर्वचन इस पटल में प्रस्तुत है । नरसिंह के विस्तृत रूप का ध्यान बतलाने के बाद भैरवन्यास की चर्चा की गयी है । भैरव के भी इक्यावन नाम हैं । उनके ध्यान का भी वर्णन किया गया है । इसी प्रकार कामकला, डाकिनी, शक्ति, इक्यावन देवियों के ऋषि आदि उनके इक्यावन नाम तथा विशाल स्वरूप के विस्तृत ध्यान की पृथक्-पृथक् प्रस्तुति इस पटल में है । इक्यावन देवियों के नाम निम्नलिखित है—महालक्ष्मी, वागीश्वरी, अश्वारूढा, मातङ्गी, नित्यक्लिन्ना, भुवनेश्वरी, उच्छिष्टचाण्डालिनी, भैरवी, शूलिनी, वनदुर्गा, त्रिपुरा, त्वरिता, अघोरा, जयलक्ष्मी,

वज्रप्रस्तारिणी, पद्मावती, अन्नपूर्णा, कालसङ्कर्षिणी, धनदा, कुक्कुटी, भोगवती, शबरेश्वरी, कुब्जिका, सिद्धिलक्ष्मी, बाला, त्रिपुरसुन्दरी, तारा, दक्षिणकाली, छिन्नमस्ता, त्रिकण्टकी, नीलपताका, चण्डघण्टा, चन्द्रेश्वरी, भद्रकाली, गुह्यकाली अनङ्गमाला, चामुण्डा, वाराही, बगला, जयदुर्गा, नारसिंही, ब्रह्माणी, वैष्णवी, माहेश्वरी, इन्द्राणी, हरसिद्धा, फेत्कारिणी, लवणेश्वरी, नाकुली, मृत्युहारिणी और कामकला काली । उपर्युक्त इक्वायन देवियों के मन्त्र और ध्यान का निर्वचन पृथक्-पृथक् करने के पश्चात् षोढान्यास के समर्पण और विधि की चर्चा की गयी है । मन्त्रसहित बलि-समर्पण का उल्लेख कर अन्त में यह बतलाया गया कि इन न्यासों का अनुष्ठाता साक्षात् देवीपुत्र हो जाता है । वह न तो किसी के ऊपर क्रोध करे और न किसी को अभिशाप दे, क्योंकि वह जिसके प्रति ऐसा करेगा उस मनुष्य की छह महीने के अन्दर मृत्यु हो जायेगी ।

नवम पटल—इस पटल में त्रैलोक्यमोहन कवच का विवेचन है । पार्वती ने भगवान् महाकाल से त्रैलोक्यमोहन कवच के विषय में प्रश्न किया । महाकाल ने कहा कि इस कवच से समस्त सिद्धियाँ हस्तगत होती हैं । शिष्य को उसका उपदेश करने वाला गुरु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है । चूँकि मेरी मृत्यु नहीं होती अत: मैं तुमको इसका उपदेश करूँगा । तत्पश्चात् महाकाल ने इस कवच के ऋषि छन्द देवता आदि का वर्णन किया । कवच का भी उल्लेख प्रस्तुत पटल में है । इस कवच से अवगुण्ठित व्यक्ति को प्राप्त होने वाले फल की चर्चा कर अन्त में इसकी गोपनीयता बतलायी गयी है ।

दशम पटल—प्रस्तुत पटल में कामकला काली के रावणविरचित स्तोत का वर्णन है । रावण जब मुञ्जमाली आदि कालकेय असुरों पर विजय प्राप्त करने चला तब उसने इस स्तोत्र का पाठ किया था । स्तोत्र में काली के विशाल रूप का वर्णन कर उससे यह प्रार्थना की गयी कि हिरण्याक्ष के वंशजों के ऊपर रावण को विजय प्राप्त हो । अन्त में स्तोत्र-पाठ की फलश्रुति का कीर्त्तन है ।

आगे चलकर प्रसन्नाकलश और शक्तिसामरस्य के विधान की प्रस्तुति है । समस्त मनुष्य इसके अधिकारी हैं । जहाँ तक मुहूर्त्त का प्रश्न है विशिष्ट पर्व के साथ सभी दिन इसके लिये ग्राह्य हैं । उपवास या भोजन का कोई नियम नहीं है । इतना अवश्य है कि इसका अनुष्ठान महानिशा में होता है । इस अनुष्ठान में प्रयोज्य बारह प्रकार की सुरा सभी यजमानों के लिए ग्राह्य हैं । शक्ति (=स्त्री) के विषय में कहा गया है कि यदि परकीया उपलब्ध न हो तो स्वकीया शक्ति का उपयोग करना चाहिये । ब्राह्मण साधक के लिए चारो वर्ण की स्त्रियाँ ग्राह्य हैं । क्षत्रिय के लिये ब्राह्मणीवर्जित त्रिवर्ण की वैश्य के लिये ब्राह्मणीक्षत्रियावर्जित द्विवर्ण की और शूद्र साधक के लिये उपर्युक्त तीनो स्त्रियाँ वर्जित होकर केवल शूद्रा स्त्री ग्राह्य है ।

विकलाङ्गी आदि स्त्रियाँ भी त्याज्य मानी गयी हैं। सुरा के लिए प्रयोज्य पाँचों स्थान का वर्णन करने के बाद समस्त पीठों की स्थापनविधि का निर्वचन है। मन्त्रोच्चारपूर्वक मण्डलरचना को बतलाने के बाद शक्ति की चर्चा है। स्नानोत्तर वस्त्रालङ्कार धारण की हुई शक्ति के शरीर पर स्थित वस्त्र का मन्त्रोच्चारणपूर्वक विमोचन कराकर उसे नग्न करने तथा मन्त्रपूर्वक उसकी गोद में कलश रखने को कहा गया है। तत्पश्चात् अन्य कृत्यों की चर्चा कर आठ शक्तियों की पूजा का विधान वर्णित है। मन्त्र का उच्चारण करते हुए कुल द्रव्य अर्थात् सुरा का शापविमोचन कर उसके अन्दर आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी का ध्यान तत्पश्चात् सुधा देवी का ध्यान बतलाकर त्रिकोणचक्रलेखन की चर्चा की गयी है। अन्त में अमृतीकरण अमृतन्यास आदि करने का उल्लेख है।

एकादश पटल—प्रारम्भ में पूर्व चर्चित देवी के अमृतन्यास की विधि और उस का मन्त्र बतलाया गया है। उक्त मन्त्र के द्वारा कलश में अमृत की स्थापना कर काली का आवाहन करें। उसके पहले पचीस तत्त्वों के लिये पचीस पात्रों की स्थापना का वर्णन भी किया गया है। पात्राधार की स्थापना फिर उस पर कलश की स्थापना कर दोनों की पूजा करनी चाहिये। पुनः स्तम्भन आदि पञ्चमुद्राओं को प्रदर्शित करना चाहिये। ये मुद्रायें महाकला हैं। उसी समय पञ्चविद्या का उच्चारण करने की भी चर्चा है। इसके बाद पाँचों विद्याओं अर्थात् मन्त्रों का स्वरूपवर्णन इस पटल में प्रस्तुत है। अन्त में बतलाया गया है कि ये विद्यायें समस्त दोषों का नाश कर देती हैं।

द्वादश पटल—इस पटल में देवी ने कामकला काली के सहस्र नामों को सुनने की इच्छा व्यक्त की। इनमें कुछ नाम रूढ हैं और कुछ देवी के गुणों के कारण रखे गये हैं। ये नाम इष्टसिद्धि प्रदान करते हैं, रोग अकाल मृत्यु को दूर करते तथा पुरुषार्थचतुष्टय प्रदान करते हैं। इसके बाद इस काली के एक सहस्र नामों का उल्लेख है। इस सहस्रनाम के श्रवण का फल यह है कि ब्राह्मण वेदपारङ्गत, क्षत्रिय रिपुञ्जय, वैश्य धन-धान्यसमृद्ध और शूद्र समस्त कल्याण युक्त होता है। जो साधक निशीथ में इसका पाठ करता है उसके लिये कुछ भी असाध्य नहीं होता। यह सहस्र नाम पद्यात्मक और गद्यात्मक दोनों प्रकार का है। पद्यात्मक सहस्रनाम के बाद गद्यात्मक का वर्णन कर अन्त में कहा गया कि पद्य एवं गद्य दोनों नामों में से गद्यात्मक नामों का पाठ पद्यात्मक पाठ के आदि और अन्त दोनों स्थितियों में करना चाहिये। यदि यह सम्भव न हो तो एक ही बार अन्त में पढ़े। गद्यपाठ से पाठक स्तोत्रराज के पाठ का फल प्राप्त करता है।

त्रयोदश पटल—प्रस्तुत पटल में देवी कामकला काली के एकाक्षर से लेकर जितने मन्त्र हैं उनके स्वरूप को सुनने के लिये याचना करती है। महाकाल ने क्रम

से मरीचि कपिल, हिरण्याक्ष, लवणासुर, वैवस्वत, दत्तात्रेय, दुर्वासा, उत्तङ्क, कौशिक, और्व, पराशर, भगीरथ, बालि, संवर्त्त, नारद, गरुड, परशुराम, भार्गव, सहस्रबाहु, पृथु और हनुमान् के द्वारा उपासित मन्त्रों का उल्लेख कर बाद में कामकला काली के शताक्षर मन्त्र का वर्णन किया है । इसके बाद कामकला काली के उस मन्त्र का वर्णन है जिसमें एक हजार से अधिक अक्षर हैं । इस मन्त्रों का वर्णन कूट भाषा अथवा प्रतीक के माध्यम से किया गया है ।

चतुर्दश पटल—चतुर्दश पटल में पहले कामकला काली से अयुताक्षर (दश हजार अक्षरों वाले) मन्त्र की कथा का वर्णन है । महाकाल एवं नारायण दोनों कामकला काली के दर्शनार्थ ऋष्यन्तर कल्प में सृष्टि के प्रारम्भ में पुष्पक द्वीप में जाकर दिव्य सौ वर्षों तक तपस्या किये । इस तपस्या के फलस्वरूप देवी साक्षात् ऐसे महा उग्ररूप में उपस्थित हुई कि जिसको ये दोनो देख न सके और अपनी आँखें बन्द कर बैठ गये । माता काली ने दोनों को भयभीत देख कर सौम्य शरीर धारण किया । फिर वे दोनों उनके पैरों पर गिर पड़े । देवी ने उनसे वर माँगने को कहा । भगवान् शिव और भगवान् विष्णु ने कामकला काली के सौम्य एवं उग्र स्वरूपों की संख्या तथा उनके मन्त्रों को जानने की इच्छा प्रकट की । महाकाली ने कहा—न तो मेरी मूर्त्तियों का और न ही मेरे मन्त्रों का अन्त है । सौम्य और भयानक मूर्तियों का मेरे द्वारा प्रकाशन परमशिव को मोह एवं राक्षसों को भय देने के लिये है । मेरी सौम्य मूर्त्तियाँ एक करोड़ तथा उग्र मूर्त्तियाँ आठ करोड़ बतलायी गयी हैं । मेरी सौम्य मूर्त्तियों के मध्य त्रिपुरसुन्दरी सर्वोत्तम है । इसी प्रकार कामकला काली सबसे उग्र मूर्त्ति कही गयी है । इनके ज्ञाता विश्व में मात्र शिव ही हैं । उक्त नव करोड़ मूर्त्तियों में भी पचपन मूर्तियाँ मुख्य हैं । इन मूर्त्तियों के ध्यान मन्त्र और पूजाविधान पृथक्-पृथक् हैं । पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊर्ध्व और अधः—इन छह आम्नायों के उपासकों तथा अन्य देवता आदि के द्वारा दृष्टि एवं अनुभव के अनुसार उनकी उपासना की जाती है । मेरे इस अयुताक्षर मन्त्र के अन्दर षडाम्नाय के समस्त मन्त्र निगूढ हैं । इस प्रकार कामकला काली की उपासना से सभी मूर्त्तियों की उपासना हो जाती है । जिस प्रकार समस्त नदियों का समुद्र एकायतन है उसी प्रकार सभी कालीमन्त्रों का अयुताक्षर मन्त्र भी एक आयतन है । महाकाल ने कहा—इसके बाद हम दोनों ने देवी से उक्त मन्त्र को सुनाने के लिये निवेदन किया । देवी अयुताक्षर मालामन्त्र का उपदेश कर अन्तर्हित हो गयी । इसके बाद इस मन्त्र को भगवान् विष्णु ने नारद और सनक को दिया । भगवान् शिव ने दुर्वासा, कश्यप, दत्तात्रेय और कपिल ऋषियों को सुनाया । इसी शिष्यप्रशिष्य-परम्परा से यह मन्त्र इस लोक मे प्रतिष्ठित हुआ । यह मृत्युञ्जय प्राण मन्त्र है । देवी की कृपा से यह तभी प्राप्त होता है जब गुरु का अनुग्रह हो । अन्त में कहा गया कि गुरु को सन्तुष्ट करके ही इस मन्त्र को प्राप्त करना चाहिये ।

पञ्चदश पटल—इस अन्तिम पटल में छठी काली अर्थात् कामकलाकाली के अयुताक्षर मन्त्र का स्वरूप बतलाया गया है । इसके स्मरण मात्र से समस्त सिद्धियाँ प्रप्त हो जाती है । इस काली के अयुताक्षर मन्त्र का स्वरूप छह सौ पचीस श्लोकों में वर्णित है ।

अन्त में इसके माहात्म्य का वर्णन है । राम ने रावण का, नरसिंह ने हिरण्यकशिपु का, शिव ने त्रिपुरासुर का, परशुराम ने कार्त्तवीर्य का वध इसी मन्त्र के प्रभाव से किया था । कुबेर के धनाधीश, इन्द्र के स्वर्गाधीश होने के मूल में यही मन्त्र है । इस मन्त्र के प्रभाव से धनार्थी धन, विद्यार्थी विद्या, राज्यार्थी राज्य और पुत्रार्थी आदि पुत्र इत्यादि प्राप्त करते हैं । यह चिन्तामणि के समान समस्त कामनाओं की सिद्धि करता है । यह अति गुह्यतम है । इसका प्रकाशन योग्यतम पात्र के लिये ही करना चाहिये ।

विषयानुक्रमणिका

...॰॰✻॰॰...